## कठपुतली कला का विकास

**प्राचीन काल:**
कठपुतली कला की उत्पत्ति 3000 साल से भी पहले की मानी जाती है। प्राचीन मिस्र, ग्रीस और भारत में इसके प्रमाण मिले हैं।

**भारत में:**
हड़प्पा और मोहनजो-दारो की खुदाई में मिट्टी की कठपुतलियाँ मिली हैं, जो इस कला की प्राचीनता को दर्शाती हैं।

**विभिन्न रूप:**
भारत में कठपुतली कला के विभिन्न रूप प्रचलित हैं, जैसे कि राजस्थान की 'कठपुतली', महाराष्ट्र की 'दास्तां' और दक्षिण भारत की 'बोम्मालत्तम'।

**आधुनिक विकास:**
हाल के वर्षों में, कठपुतली कला को आधुनिक रूप देने के प्रयास किए गए हैं, जैसे कि कठपुतली थिएटर और कठपुतली कार्यशालाएँ।

## कठपुतली कला का महत्व:

**मनोरंजन:**
कठपुतली कला मनोरंजन का एक लोकप्रिय साधन रही है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

**शिक्षा:** कठपुतली कला का उपयोग शिक्षा में विशेषकर बच्चों की शिक्षा में किया जाता है।

**सांस्कृतिक संरक्षण:**
कठपुतली कला विभिन्न संस्कृतियों और लोककथाओं को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**सामाजिक संदेश:**
कठपुतली कला का उपयोग सामाजिक संदेशों जैसे कि स्वच्छता, शिक्षा और सामाजिक न्याय को प्रसारित करने के लिए किया जाता है।

धन्यवाद ।